आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 8 अप्रैल-2018 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति सन्देश

पशु जैव अपशिष्टों का निस्तारण वैश्विक जिम्मेदारी है

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों।

राम–राम सा।

चिकित्सकीय अपशिष्टों का निस्तारण एक वैश्विक जिम्मेवारी है। पशु चिकित्सकीय अपशिष्टों का भी निस्तारण इसमें शामिल है। अपने सामाजिक दायित्वों के मद्देनजर पशुपालन के हित में वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना करके जैविक उत्पादों की जांच और अपशिष्टों व अनुपयोगी सामग्री के निस्तारण के तौर–तरीकों पर अनुसंधान किया जा रहा है। चिकित्सकीय अपशिष्टों के सही निस्तारण के अभाव में मानव व संपूर्ण जीव–जगत के स्वास्थ्य को गंभीर खतरा हो सकता है। वायु, जल व अन्य वाहकों द्वारा हानिकारक जीवाणु और विषाणुओं के संक्रमण से आमजन, चिकित्सक और परिचारक चपेट में आ सकते हैं। मनुष्यों में एड्स, हेपेटाइटिस और टी.बी. बीमारियों के होने का अंदेशा रहता है। पशुओं में भी संक्रमण रोगों का प्रसार संभव है। नैदानिक पशुचिकित्सा में उत्पन्न विभिन्न प्रकार के अपशिष्ट जैसे सुई, सीरिंज, टीके, शीशियां, पशु रक्त और ऊतक सहित अन्य संक्रामक स्टॉक चिकित्सकीय अपशिष्ट में आते हैं। पशुचिकित्सकों द्वारा इनको अलग–अलग वर्गीकरण के आधार पर निस्तारण के वैज्ञानिक तौर–तरीकों को व्यवहार में लाया जाता है। चिकित्सालयों में कुल अपशिष्टों का 20 फीसदी जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट होता है। किसान और पशुपालक भाइयों द्वारा कई बार अपने गांव, ढाणी या घर पर भी पशुओं के उपचार के दौरान भी जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में पशु और स्वयं को संक्रमण से बचाने के लिए अपशिष्ट के निस्तारण के तौर–तरीकों को उपयोग में लाना समझदारी है। मिट्टी में गड्ढ़ा खोद कर जैव अपशिष्टों को जमींदोज करने से बचाव किया जा सकता है। विश्वविद्यालय में स्थापित केन्द्र द्वारा लोगों को जागरूक करने के लिए आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में आप भी शामिल हो सकते हैं। टोल फ्री हैल्प लाइन द्वारा भी राजुवास के वैज्ञानिक और चिकित्सा विशेषज्ञों से परामर्श सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। जय हिन्द !

(प्रो. बी. आर. छीपा)

राजुवास को ई-गर्वनेन्स राजस्थान अवार्ड से नवाजा

माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे से ई गर्वनेन्स राजस्थान अवार्ड प्राप्त करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के संकाय अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने राजस्थान सूचना प्रौद्योगिकी दिवस–2018 के अवसर पर राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय को ई–गर्वनेन्स राजस्थान अवार्ड 2016–17 से सम्मानित किया है।श्रीमती राजे ने जयपुर में 21 मार्च को आयोजित आई. टी. डे. समारोह में वेटरनरी विश्वविद्यालय के संकाय अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता प्रो. त्रिभवन शर्मा को यह पुरस्कार प्रदान किया। राज्य सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग द्वारा राजस्थान में संस्थानिक ई–गर्वनेन्स में श्रेष्ठ कार्य करने वाले संस्थान को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

मुख्य समाचार

के.वी.के. नोहर की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की पांचवीं वैज्ञानिक सलाहाकार समिति की बैठक 8 मार्च को पंचायत समिति नोहर के सभागार में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने की। बैठक के मुख्य अतिथि पंचायत समिति नोहर के प्रधान श्री अमर सिंह पूनिया ने कहा कि केन्द्र की गतिविधियों से क्षेत्र के किसानों को अत्यंत लाभ मिल रहा है। श्री पूनिया ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड की महत्ता के साथ–साथ मधुमक्खी व कुक्कुट पालन, डेयरी और मशरूम उत्पादन जैसे कृषि के सहायक व्यवसायों के प्रशिक्षण की महत्ती आवश्यकता जताई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने कहा कि केन्द्र की गतिविधियों से क्षेत्र के किसान और पशुपालकों को नवीन तकनीकों का लाभ मिल रहा है। उन्होंने बारानी क्षेत्र में खेजड़ी व केर की महत्ता को इंगित करते हुए वृक्षारोपण कार्यों पर जोर दिया। क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. उम्मेद सिंह ने पशुपालन को कृषि के साथ–साथ करने की आवश्यकता जताई। कृषि के उपनिदेशक श्री जयनारायण बेनीवाल ने जलवायु परिवर्तन के अनुकूल खेती से जुड़ी महिलाओं के प्रशिक्षण पर जोर दिया। डॉ. अनूप कुमार ने स्वयं सहायता समूहों को केन्द्र की गतिविधियों से जोड़ने को आह्वान किया। बैठक में डॉ. हनुमानराम, डॉ. अशोक कुमार और मुंशीराम ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम समन्यवक डॉ. कुलदीप नेहरा ने स्वागत उद्‌बोधन दिया। केन्द्र के शस्य विशेषज्ञ श्री भैरू सिंह चौहान, पशुपालन के डॉ. नवीन सैनी, कृषि प्रसार के डॉ. अक्षय सिंह घिंटाला, उद्यान के मुकेश कुमार वर्मा और गृह विज्ञान की विशेषज्ञ अंजली शर्मा ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत कर आगामी कार्य योजना सदन में रखी।

पशु आपदा प्रबंधन पर राष्ट्रीय सेमीनार सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय में "पशुओं के आपदा प्रबंधन में नवीन विकास और रणनीतियां" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार 14 मार्च को संपन्न हो गई। राजुवास के पशु आपदा प्रबंधन तकनीकी केन्द्र के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार का उद्‌घाटन वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. छीपा ने कहा कि स्थानीय परिवेश के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं से बचाव की तकनीकों का गांव–ढ़ाणी में किसानों और पशुपालकों तक पहुँचाना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन में पशुओं को शामिल किए जाने के निर्णय के लिए आभार जताया। उद्‌घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण नई दिल्ली की एस.आर.ओ. डॉ. मोनिका गुप्ता ने कहा कि राजस्थान सूखा और

अकाल के आपदा प्रबंधन के लिए देश में अग्रणी भूमिका अदा कर सकता है। उन्होंने राजुवास के पशुआपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र की गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि सरल आपदा प्रबंधन तकनीकों को पशुपालकों तक पहुँचाया जाना चाहिए। समापन सत्र के मुख्य अतिथि वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने सभी संभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस सत्र में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की डॉ. मोनिका गुप्ता, सीमा सुरक्षा बल के डॉ. विनय यादव, इण्डो–तिब्बत सीमा बल और नेशनल डिजास्टर रैसपांस फोर्स के अधिकारियों ने शिरकत कर पत्र वाचन किया। राजुवास पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक और सेमीनार के संयोजक डॉ. प्रवीन बिश्नोई ने बताया कि सेमीनार में केन्द्र द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय में आपदा प्रबंधन पर एक म्यूजियम और लाइब्रेरी की स्थापना किए जाने की आवश्यकता जताई गई। पशु चिकित्सालयों में वेटरनरी इमरजेन्सी रैसपांस टीमों के गठन करने की अभिशंषा की गई। सेमीनार में बीकानेर जिले के 25 प्रगतिशील पशुपालकों ने भी वैज्ञानिकों से संवाद स्थापित कर अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

चूरू जिले के 28 पशुपालकों का भ्रमण

राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत अन्तर जिला पशुपालक उत्प्रेरण व भ्रमण कार्यक्रम में चूरू जिले के 28 पशुपालकों का दल 15 मार्च को वेटरनरी विश्वविद्यालय पहुँचा। प्रसार शिक्षा के सहायक प्राध्यापक डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा ने डेयरी फॉर्म में राठी गो वंश की विशेषताओं, वैज्ञानिक पालन और दुग्ध उत्पादन कार्यों से अवगत करवाया। पशुपालकों ने राजुवास के सजीव पशु विविधिकरण मॉडल में किसानों की आय बढ़ाने के लिए खरगोश, मुर्गी, बतख और मछली पालन के उपायों के बारे में जाना। राजुवास के तकनीकी म्यूजियम में पशुचिकित्सा उपचार और पोषण सहित पशुपालन के विभिन्न आयामों को मॉडल और रंगीन छाया चित्रों के माध्यम से दिग्दर्शन किया।

कानासर में चारा उत्पादन एवं संरक्षण पर पशुपालक प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, द्वारा कानासर गांव में उन्नत पशुपोषण एवं हरा चारा उत्पादन विषय पर 17 मार्च को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि पशु के अच्छे स्वास्थ्य एवं उत्पादकता को बढ़ाने के लिए पशुओं को दाना–बाटें की सन्तुलित मात्रा के साथ हरा चारा खिलाना अति आवश्यक है, अतः पशुपालकों को इस पर विशेष ध्यान रखना है। प्रशिक्षण शिविर में केन्द्र के विशेषज्ञ श्री दिनेश आचार्य एवं श्री महेन्द्र सिंह मनोहर ने हरा चारा उत्पादन, अजोला उत्पादन तकनीक, हरे चारे को संरक्षण रखने की सायलो बैग तकनीक तथा यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक तकनीक के बारे में पशुपालकों को तकनीकी जानकारी दी। इस प्रशिक्षण शिविर में 32 पशुपालकों को लाभान्वित किया गया। कार्यक्रम के समापन पर गांव के ही

एक प्रगतिशील पशुपालक पूर्णाराम को पशुधन चारा केन्द्र की ओर से एक साइलो बैग प्रदान किया गया।

पशुचिकित्सा कार्मिकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के 85 पशुचिकित्सा कार्मिकों का "जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के प्रबंधन और निस्तारण" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण 22 मार्च को वेटरनरी कॉलेज के जन स्वास्थ्य विभाग में सम्पन्न हो गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने कहा कि चिकित्सा कार्मिकों को जैव अपशिष्ट का निस्तारण पूरी जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए। यह स्वच्छता अभियान का ही एक अहम हिस्सा है क्योंकि इसके दुष्परिणाम से सम्पूर्ण मानव और जीव जगत प्रभावित होता है। प्रो. छीपा ने सभी चिकित्सा कार्मिकों को आह्वान किया कि वे प्रशिक्षण के दौरान सीखे गए कार्यों को पशुपालकों तक भी पहुँचाएं। उन्होंने पशुपालकों को जागरूक करने के लिए विभाग द्वारा हिन्दी में बनाई गई लघु चलचित्र की सराहना करते हुए इसको जन–जन तक ले जाने का आग्रह किया। राजुवास के पशुजैव चिकित्सकीय अपशिष्ट तकनीकी निस्तारण केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक एवं प्रशिक्षण संयोजक प्रो. राकेश राव ने बताया कि दो दिवसीय प्रशिक्षण में अपशिष्ट निस्तारण के प्रायोगिक तौर–तरीकों के साथ वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किये गए। समारोह में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, राजुवास के कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधीच और प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह भी मौजूद थे। प्रशिक्षण में डॉ. मनोहर सेन व डॉ. पंकज मंगल ने अपशिष्ट निस्तारण के प्रायोगिक कार्यों का प्रदर्शन किया। प्रो. राकेश राव, डॉ. रजनी जोशी, डॉ. मोहम्मद अयूब ने व्याख्यान प्रस्तुत किए।

राठी पशुपालक मेले में राजुवास की प्रदर्शनी

उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर द्वारा उरमूल सेतु संस्थान, लूनकरणसर परिसर में 26 मार्च को आयोजित राठी पशुपालक मेले में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा एक प्रदर्शनी स्टॉल का आयोजन किया गया। राठी पशुपालक मेले के मुख्य अतिथि राजुवास के पूर्व कुलपति डॉ. ए.के. गहलोत, आर.सी.डी.एफ.जयपुर के प्रबंध निदेशक राजेश यादव, अरविन्द ओझा, सचिव, उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर और डॉ. एम. एस. राठौड़, परियोजना समन्वयक, उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर ने विश्वविद्यालय प्रदर्शनी स्टॉल का अवलोकन किया। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों को मॉडल, चार्टस, पैनल्स, रंगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर के प्रभारी डॉ. राजकुमार बेरवाल द्वारा पशुओं के देखभाल एवं पशु पोषण पर व्याख्यान दिया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 7, 12, 13, 14 एवं 15 मार्च को गांव बाडकी, रामसरा, देपालसर, गुलपुरा एवं जीली गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 165 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 7, 9, 14, 15 एवं 16 मार्च को गांव सादगी, मटीली –राठान, अमरपुरा–जाटान, प्रेमपुरा एवं सरदारपुरा–बीका गांवो में तथा दिनांक 5 मार्च को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 212 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही द्वारा 5, 7, 8, 12, 14, 22 एवं 23 मार्च को गांव टाकिया, जायदरा, फूलाबाई का खेडा, डाक, वारकी खेड़ा, कैलाशनगर एवं दरबारी खेडा गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों 197 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा 257 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 5, 6, 7, 8, 9, 12, 13 एवं 14 मार्च को गांव मणु, हुडास, भरनावा, घरड़िया, मालगांव, क्यामसर, किचक एवं बेडवा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 257 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर द्वारा 13 एवं 24 मार्च को गांव बोराड़ा, चून्दडी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 52 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 317 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा 6, 7, 8, 9, 12, 13, 14 एवं 15 मार्च को गांव पाटली, खजूरी, करोली, कांबा, मोदर, बरोठी, भीना एवं छापी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 217 महिलाओं सहित 317 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा 5 गांवों में प्रशिक्षण आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 7, 8, 9, 14 एवं 15 मार्व को गांव बेढ़म, नीरौली, पेण्डका, बामनवाड़ी एवं हतीजर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 44 महिला पशुपालक सहित कुल 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., टोंक द्वारा 7, 8, 9, 12, 13 एवं 14 मार्च को गांव देवली भांची, चिरोंज, शिवपुरी, इन्दोकिया, हमीरपुर एवं लहन गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 181 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 6, 8, 14, 16, 21 एवं 23 मार्च को गांव अर्जुनसर, महाजन, अलोदा, 9

एमकेडी, मुसलकी एवं उतमदेसर गांवों में तथा 12 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 213 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 7, 8, 9, 22, 23 एवं 26 मार्च को गांव कैथोडी, खेड़ली पांड, रंगपुर, तोरण, खजुरना एवं कादीहेडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 173 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 7, 8, 9, 14, 15 एवं 16 मार्च को गांव बिलोदा, कुम्बाखेड़ा, होड़ा, कुथना, देवरी एवं घाटी गांवों में तथा दिनांक 13 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

धौलपुर केन्द्र में 297 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 8, 9, 12, 14, 15 एवं 16 मार्च को गांव जाटोली, एदलपुर, दुल्हारा, सिंघोरा का पुरा, माही का नगला, सांद्रा एवं पिपेहरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 297 पशुपालकों एवं कृषकोंने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 12, 13, 15 एवं 21 मार्च को गांव रामगढ़, थालड़का, 16–17 केएनएन गांवों में प्रक्षेत्र दिवस (फिल्ड डे) का आयोजन किया गया। जिसमें 104 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

नवजात बछड़ों में होने वाले मुख्य रोग, उपचार व रख-रखाव

ग्रामीण परिपेक्ष्य में पशुपालन का बहुत महत्व है। स्थानीय अर्थव्यवस्था में सहायक होकर स्वरोजगार का भी अच्छा साधन सिद्ध हो सकता है। भारत में गो पालन सदियों से चला आ रहा है। दुनिया भर में यहां के देशी नस्ल की गाय के दूध की बहुत अधिक मांग है। इस दूध में बीमारियों से लड़ने की क्षमता है। अच्छे दुग्ध उत्पादन के लिये स्वस्थ पशुओं का होना जरूरी है।

स्वस्थ गोवत्स ही पशुपालन का आधार होते हैं जो आगे चल कर अधिक उत्पादन वाली गायों में विकसित होकर स्वस्थ बैल के रूप में जर्म प्लाज्म भी सुरक्षित रह सकता है। इसलिये 6 माह तक के गोवत्सों की उचित देखभाल व बीमारियों से बचाव आवश्यक है।

बछड़ों में होने वाले मुख्य रोग : न्यूमोनिया, आफरा, नेवल इल, एनीमिया, कब्ज, दस्त, परजीवी (बाह्य व आन्तरिक)

न्यूमोनिया

कारण : मौसम में अचानक परिवर्तन होने से नम, ठंडा व धूल भरा वातावरण व गीले स्थान पर रहने से, स्थान की कमी के कारण अधिक बछड़ों को एक ही बाड़े में रखने से।

लक्षण : बछड़े का सुस्त होना, तेज बुखार आना, दूध नहीं पीना, तेजी से सांस लेना, बाद में सांस लेने में तकलीफ होना।

उपचार व रख–रखाव : बीमार बछड़ों को अन्य से अलग करना, सीधी आने वाली ठंड़ी हवा से बचाव, उचित तापमान वाला दूध ही पिलाना, नवजात बछड़ों को क्लोस्ट्रम जरूर देना जिससे उसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ सकें, रोग का उचित उपचार करवाना, साफ सफाई का ध्यान रखना।

आफरा

कारण : बछड़ों को बरसीम व रिजका खिलाने से, बछड़ों के खाने–पीने में अचानक परिवर्तन होने से, गंदे फर्श व वस्तुओं को चाटने से, साबुत व सूखा दाना खाने से, अधिक मात्रा में फलीदार, दाल वाले पौधे खाने से।

लक्षण : अचानक पेट फूलना, खाना–पीना छोड़ देना, जमीन पर गिर जाना, सांस लेने में तकलीफ होना।

उपचार व रख–रखाव : खाने–पीने में अचानक परिवर्तन न करें, अधिक फलीदार, रिजका, बरसीम को न खिलायें, ध्यान रखें की हरे चारे के साथ सूखा चारा आवश्य दें, मुख द्वारा रबर की ट्यूब डालें जिससे उपस्थित गैस बाहर आ सके, बछड़े को इस प्रकार खड़ा रखें जिससे पिछला वाला भाग नीचे व अगला भाग ऊंचाई पर हो, 200–250 एमएल मीठा तेल पिलायें, आपात स्थिति में 14/16 गेज की सूई का प्रयोग कर गैस निकाली जाती है पर किसी पशु चिकित्सक की उपस्थिति में।

नाभी बुखार

कारण : स्वच्छता में कमी (नाल), जन्म के बाद नाभी की सफाई पूरी तरह से न करने के कारण व एन्टी सेप्टिक ड्रेसिंग नहीं करने के कारण, नम स्थान पर रखने के कारण, अन्य बछड़ों द्वारा नाभी को चूसने के कारण, पुराने ब्लैड व कैंची का प्रयोग करने से, क्लोस्ट्रम पूरी मात्रा में नहीं देने से।

लक्षण : यह बीमारी बछड़ों में 1 हफ्ते से लेकर 1 महीने तक की उम्र में होती है, यह रोग जीवाणुओं द्वारा फैलता है, इसमें तेज बुखार के साथ–साथ जोड़ों में दर्द व मवाद युक्त सूजन आ जाती है व नाभी में भी सूजन, बछड़ा खाना–पीना छोड़ देता है।

उपचार व रख–रखाव : नाभी काटते समय नये ब्लैड का प्रयोग करें, एन्टी सेप्टिक ड्रेसिंग करें, साफ–सुथरे स्थान पर रखें, बछड़े को क्लोस्ट्रम नहीं पिलाने से, दस्त व कोई अन्य रोग होने से।

एनीमिया

लक्षण : लाल रक्त कणिकाओं में कमी, शरीर की गुलाबी म्यूकस झिल्ली भूरी पीली हो जाती है, हृदय गति बढ़ जाती है, मांस पेशियों में कमजोरी आ जाती है जिससे बछड़ा बैठा रहता है, शरीर की आन्तरिक शक्ति कम हो जाती है।

उपचार व रख–रखाव : इन्जेक्शन आइरन डेकस्ट्रीम (150 एमजी), इन्जेक्शन वीट ए, ई, बी कॉम्प्लेक्स का टीका लगवाने से एनीमिया रोग से बचाया जा सकता है, क्लोस्ट्रम उचित मात्रा में पिलायें, दूध छुड़ाने के बाद अच्छी क्वालिटी का देने से शुरूआत करें।

कब्ज

कारण : कम या क्लोस्ट्रम नहीं पिलाना, बछड़ों में सूखे चारे की अधिकता से, उचित मात्रा में पानी नहीं देने से।

रख–रखाव व उपचार : उचित मात्रा में क्लोस्ट्रम पिलायें, नर्म व हरा चारा दे, बछड़ों को उचित मात्रा में नमक व खनिज लवण दे, साफ पीने का पानी दे अधिक सर्दी में हल्दी गर्म पानी दे, 30–50 ग्राम अरण्डी का तेल पिलाये।

दस्त

कारण : कम मात्रा में क्लोस्ट्रम पिलाने से बछड़ों में रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी आने से, खान–पान में अचानक परिवर्तन से, मौसम में अचानक परिवर्तन से ठंडी व तेज हवाओं की चपेट में आने से, पेट में कीड़े होने से।

लक्षण : पतले दस्त लगना, बछड़ा सुस्त व तनाव में रहता है, पेट में दर्द रहता है, बुखार हो जाता व कमजोरी आ जाती है, शरीर का निर्जलीकरण हो जाता है, गम्भीर स्थिति में बछड़े की मृत्यु भी हो जाती है।

रख–रखाव व उपचार : बछड़ों को दस्त रोकने वाली औषधियां देनी चाहिए, नस द्वारा तरल पदार्थ देने चाहिए, किसी भी खाद्य पदार्थ को नए सिरे से खिलाना प्रारम्भ करते समय धीरे–धीरे शुरू करना चाहिए, उचित मात्रा में पोषक पदार्थ व साफ जल की आपूर्ति करनी चाहिए, कृमिनाशक औषधि प्रदान करनी चाहिए, रोगी बछड़ों को अन्य स्वस्थ बछड़ों से अलग कर देना चाहिए, साफ–सफाई की उचित व्यवस्था करनी चाहिए व मौसम परिवर्तन में उचित देखभाल करें, नवजात बछड़ों को क्लोस्ट्रम उचित मात्रा में देना चाहिए, उचित समय पर उपचार करवाने के साथ ही पशु शाला में उत्पन्न होने वाले रोगों या रोगों को नियंत्रण में रखने के लिए प्रभावशाली नियंत्रण व नजर रखनी चाहिए।

परजीवी–अन्तः परजीव

लम्बे व गोल कृमि फीतेनुमा कृमि लंग वर्म, पत्तेनुमा/स्टोनगाईलस, एम्फी स्टोमस आदि।

कारण : बछड़ों के रहने का स्थान गंदा रखने, कुपोषण से जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, संपर्क में आने से जैसे रोगी पशु दूषित चारागाह, पानी व गोबर आदि, पाईका रोग के कारण मिट्टी खाना, दीवारों को चाटने से।

लक्षण : बछड़ों में दस्त, पेट दर्द, सुस्ती, अधिकतर बछड़ों की मौत तक हो जाती है, भूख कम हो जाती है और एनीमिया रोग हो जाता है।

रख–रखाव : बाड़े को साफ–सुथरा रखें, गोबर को खाद बनाने के लिए गड्डे में डालें जो बाड़े से दूर हो, इसमें गोबर डालने से परजीवी में साथ–साथ उनके अण्डे भी मर जाते हैं, साफ पीने का पानी रखें, समय पर कृमिनाशक दवा का प्रयोग करें। 2 हफ्ते की उम्र से कृमिनाशक दवा दें व 1 महीने के अन्तराल पर 6 महीने तक दवा दें, बड़े बछड़ों को लगातार एक ही चारागाह में चरने के लिये न भेजें।

बाह्य परजीव–जूएं, चींचड़े, माइट्स

कारण : गर्म व नम स्थानों पर रखने से, बाड़े में गंदगी रहने से, कम स्थान पर अधिक बछड़ों को रखने से, अन्य पशु आस–पास की मिट्टी दीवारों आदि पर रहते हैं जिनके सम्पर्क में आने से।

पशु शरीर को निम्न तरीकों से नुकसान पहुंचाते हैं:

त्वचा पर चिपक कर घाव बनाते हैं जिससे शरीर में जीवाणुओं द्वारा संक्रमण भी हो जाता है। पशु का खून चूस कर उसे काफी कमजोर कर देते हैं और शरीर में खून की कमी हो जाती है। त्वचा को बार–बार काटने से जलन व खुजली हो जाती है। कई बार चींचडों के काटने से पशु में पिछले पैरों का लकवा हो जाता है। बार–बार काटने से पशु बेचैन रहता है। आराम नहीं कर सकता है, ना ही सही ढंग से खा सकता है। जिससे उसकी वृद्धि दर कम हो जाती है।

रख–रखाव : समय–समय पर पशुओं पर जूं, चिंचडे मारने वाली दवा का छिड़काव करें, पशु शरीर के अलावा आस–पास मिट्टी व दीवारों में छिपी रहती है इसलिये वहां पर भी दवा का छिड़काव करना चाहिए, अन्य दवाईयां जैसे इन्जेक्शन, इसके अलावा मीठे तेल में सल्फर (1:3) मिला कर पशु के शरीर पर लगायें। पशु के खाने में उचित मात्रा में खनिज लवण मिलायें।

डॉ. तरूण प्रीत (मो.8003388297)
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	:	प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	:	प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	:	प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	लागू नहीं

मैं प्रो. अवधेश प्रताप सिंह एतद्वद्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 30–3–2018

(प्रो. अवधेश प्रताप सिंह)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

गर्मियों में पशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल कैसे करें ?

गर्मी का मौसम शुरू होने के साथ ही किसानों को अपने पशुओं के लिए चारे–पानी की कमी महसूस होने लगती है। चारे–पानी की किल्लत से पशु उत्पादन पर बुरा असर पड़ता है, साथ ही विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होना शुरू हो जाती है। ऐसी स्थिति में सबसे ज्यादा वो पशु प्रभावित होते हैं जो अधिक दूध उत्पादन करते हैं। ज्यादा दूध देने और पर्याप्त हरा चारा न मिलने की अवस्था में पशुओं में लवणों की भारी कमी हो जाती है और इस कमी को पूरा करने के लिए पशु ईंट, पत्थर, चूना, चमड़ा, लकड़ी इत्यादि अखाद्य वस्तु चबाने–खाने लगता है। पशुओं में इस अवस्था को **पाईका** रोग कहते हैं। इसके अतिरिक्त कई बार पशु हड्डी, मांस अथवा मृत पशु को भी चाटता व खाता है जिससे पशु तुरंत ही लकवे का शिकार हो जाता है। यह लकवा **बॉटूलिज्म** नामक विषाक्तता का एक लक्षण है। यह विष (ज़हर) एक जीवाणु द्वारा उत्पन्न होता है। इस बीमारी के मुख्य लक्षण पैरों में जकड़न, चलने–फिरने में परेशानी, पशु का बैठ जाना, उठने में असमर्थता इत्यादि है। यदि जहर ज्यादा हो जाता है तो पशु की तुरंत मृत्यु हो जाती है। कई बार अप्रैल माह में अत्यधिक गर्मी से निर्जलीकरण की समस्या भी हो जाती है। अतः पशुपालक भाइयों को गर्मी में अच्छे पशु प्रबंधन के लिए कुछ बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। पशुओं को छायादार स्थान पर बांधें व पीने के लिए स्वच्छ व ठंडा पानी उपलब्ध करायें। यदि पर्याप्त पानी उपलब्ध हो तो विशेषकर भैंसों को दिन में कम से कम एक बार नहलाने का प्रबन्ध करें। पशुओं को लवण–मिश्रण की समुचित मात्रा उपलब्ध करायें ताकि पशु **पाईका** ग्रस्त होने से बचें और उन्हें बॉटूलिज्म होने से बचाया जा सके। पहले से संरक्षित चारे का सही उपयोग करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

देशी मुर्गों की नस्ल को जानें : चिट्टागोंग या मलय नस्ल :

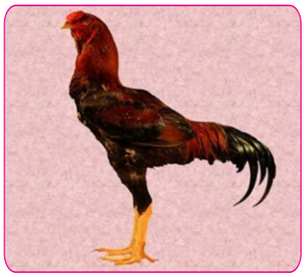

चिट्टागोंग नस्ल को मलय भी कहा जाता है। यह ऊंचाई लिए होती हैं। इस नस्ल के मुर्गे 2.5 फीट तक लम्बे और 3.5 किलो तक वजन वाले हो सकते हैं। इनकी कलंगी छोटी और गर्दन लम्बी होती है। इस नस्ल की सबसे खासियत यह है कि इनका पालन मांस और अंडे दोनों की आपूर्ति हेतु किया जा सकता है। अन्य मुख्य विशेषताओं में इस नस्ल के मुर्गों का भार जहाँ 5 से 4.5 किलो तक हो सकता है वही मुर्गियों का भार 2.5 से 4 किलो तक हो सकता हैं। इस नस्ल के मुर्गे मुर्गियों की गर्दन तो लम्बी होती है लेकिन wattles बहुत छोटी होती हैं, जिन्हें मुश्किल से देखा जा सकता है। इनकी पूंछ की ओर का भाग सिकुड़ा हुआ तो पूंछ छोटी और भरी हुई होती है। इस नस्ल की लोकप्रिय किस्मे सफेद, काले, गहरे भूरे रंग और भूरे रंग की होती हैं। पीले रंग के पैर सीधे एवं काफी मजबूत होते हैं।

पशुओं में टेटेनस रोग का कारण लक्षण उपचार और बचाव

यह रोग क्लोस्ट्रडियम टिटेनाई नामक जीवाणु के कारण होता है। यह जीवाणु लम्बा पतला व छड़ी के आकार का होता हैं। यह जीवाणु अवायवीय वातावरण में वृद्धि करता है व मिट्टी के अन्दर कई वर्षों तक जीवित रह सकता है। इस बीमारी को ''धनुश टंकार'' व लॉक जॉ के नाम से भी जाना जाता हैं। इस जीवाणु की वजह से स्तन धारियों में कंकाल तंत्र की मांस पेशियों में अकड़ या संकुचन पैदा होता हैं। इस जीवाणु का प्रकोप उष्ण कटिबंधिय क्षेत्रों में ज्यादा पाया जाता हैं। यह रोग घोडों, खच्चर और गधों में ज्यादा होता है भेड़, बकरी, सूअर, गाय, भैंस, में भी यह रोग होता है। इस जीवाणु द्वारा दो प्रकार के विष उत्पन्न होते हैं (1) हिमोलाइसिन (2) न्यूरोटॉक्सिन।

रोग का हस्तान्तरण : रोग के रोगाणु में बहुत अधिक प्रतिरोधी क्षमता होती है। यह वातावरण में मुख्य रूप से धूल, मिट्टी व गोबर में काफी समय तक रहता हैं जो संक्रमण का मुख्य कारण हैं तथा पशुओं में रोग उत्पन्न करता है।

- पशु के ब्याने के समय हाथ से प्रजनन अंगों को संक्रमित हाथों से छूने से
- पशुओं की जैर के अटकनें व आगे के बढाव के कारण भी जीवाणु का संक्रमण हो सकता है।
- बधियाकरण, शरीर के बाल काटते समय और टीकाकरण के समय में भी रोग हो सकता है।
- नवजात पशुओं में संक्रमित नाभि के द्वारा भी यह रोग फैल सकता है।
- पशु के शरीर पर किसी गहरे घाव की वजह से इस रोग के रोगाणु प्रवेश करके लक्षण उत्पन्न कर सकते हैं।
- मुख की गुहा के घाव, दांत के घाव की वजह से भी रोग का फैलाव होता है।
- ऊतकों के घाव और क्षति इन्जेक्शन, संक्रमित टीकाकरण और रासायनिक तत्वों की वजह से भी यह रोग फैलता है।

रोग के लक्षण : इस रोग का उष्मायान समय कुछ दिन से लेकर कई महीनों तक होता हैं। पशु में कठोर चाल व उदासीनता रोग के शुरूआती लक्षण होते हैं, पशु ''लकड़ी के घोड़े'' की तरह हो जाता हैं। आंख की तीसरी परत का बाहर आ जाना, पशु की मांसपेशियों में ऐंठन हो जाना, पशु की मुख की मांसपेशियों में कठोरता आने के साथ पशु का मुख खुलना बन्द हो जाता है, पशु के शरीर पर पसीने का आना, दुधारू पशु में दुध का सूखना, पशु का पैर फैलाकर लैट जाना तथा शरीर का धनुषाकार हो जाना हैं, रूमांधी पशु में आफरा आ जाना तथा इसके बाद एबोमेसम का विस्थापन हो जाता हैं, पशु की दम घुटने से मृत्यु हो जाती है।

उपचार : जीवाणु द्वारा निर्मित विष को पशु के शरीर में फैलने से रोककर, रोगकारक का विनाश करना, दम घुटनें से रोकनें के लिये मांसपेशियों को रिलेक्स करना, कील या नुकीली वस्तु से हुये घाव को हाइड्रोजन परॉक्साईड से साफ करना, पशु की देखभाल करना।

रोग की रोकथाम : स्वच्छता और उचित स्वास्थ्य उपाय अपनाने चाहिए, पशु के ब्याने के समय प्लेसेंटा और विपुल मामलों में प्रतिधारण को संभालने के लिए उचित देखभाल की जानी चाहिए, ऑपरेशन के समय स्वच्छ सर्जिकल उपकरणों का उपयोग किया जाना चाहिए, पशु के शरीर के घाव को सावधानीपूर्वक साफ किया जाना चाहिए, पशुओं को धातुओं व नुकीली वस्तुओं से दूर रखना चाहिए, कांटे के तारों के पास पशु को ना तो बांधना चाहिए और ना ही चारा खाने देना चाहिए, पशु के बंध्याकरण के दौरान सभी सावधानियों का पालन करना चाहिए, बधियाकरण को खुले माध्यम वातावरण में नहीं करना चाहिए, पशु को टिटनेस का टीका लगवाना चाहिए।

डॉ. परमजीत, डॉ. कमल पुरोहित,(मो. 8890257135)
वी.यू.टी.आर.सी. बाकलिया नागौर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अप्रैल, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँहपका एवं खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, चूरू, जयपुर, झुंझुंनू, सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चित्तौड़गढ़, नागौर, अलवर, हनुमानगढ़, सीकर, अजमेर, जालोर, बीकानेर, बाड़मेर
पी.पी.आर. रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, उदयपुर, नागौर, अजमेर, सीकर, कोटा, जालोर,
चेचक (माता) रोग	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, झुंझुंनू, जालोर, बीकानेर, हनुमानगढ
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, बूँ दी, अजमेर, दौसा, राजसमन्द, झं ुझुनूं, बारां, सीकर, पाली, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, बीकानेर, झुंझुनू, हनुमानगढ़, जालोर, श्रीगंगानगर, जोधपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, अलवर, नागौर, धौलपुर, टोंक, जोधपुर
न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, सीकर, बीकानेर, हनुमानगढ़, झुंझुंनू
बोटूलिज्म	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, पाली, श्रीगंगानगर
कंटेजियस कैपराइन प्लयूरोन्यूमोनिया	भेड़, बकरी	जयपुर, झुंझुंनू, श्रीगंगानगर, बारां
सर्रा (तिबरसा) रोग	भैंस, ऊँट, गाय	धौलपुर, नागौर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़, भरतपुर
अन्तः परजीवी– गोल– कृमि, पर्ण–कृमि	गाय, भैंस, भेड़ बकरी	डूँगरपुर, बूँदी, धौलपुर, भरतपुर, सीकर, बाँसवाड़ा, कोटा, राजसमन्द, हनुमानगढ, श्रीगंगानगर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाईटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी

दुलाराम ने भेड़पालन से शुरू की आजीविका

राजस्थान में भेड़पालन ग्रामीण क्षेत्र में एक प्रमुख व्यवसाय के रूप में है। बारानी खेती, कम वर्षा और मानसून आधारित खेती के कारण पशुपालन किसानों की आजीविका का आधार है। इस कारण नागौर जिले में भेड़–बकरी पालन को बहुत महत्व दिया जाता है, क्योंकि भेड़–बकरी पालन से भैंस व गाय की तुलना में कम खर्च करके अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। भेड़–पालन का ऐसा ही एक उदाहरण प्रस्तुत किया है लाड़नू तहसील के गांव बाकलिया के दुलाराम गौरा ने। दुलाराम के पास 20 बीघा जमीन है जिस पर वे वर्षा आधारित खेती करते हैं। पर्याप्त आय नहीं होने के कारण इन्होंने भेड़पालन अपनाया और पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) से समय–समय पर वैज्ञानिक विधियों से भेड़ पालन करने के प्रशिक्षण एवं अजोला उत्पादन, टीकाकरण आदि का प्रशिक्षण प्राप्त कर अच्छा भेड़ पालन कर रहे हैं। दुलाराम के पास 50 भेड़ (45 मादा एवं 5 नर) हैं। जिससे वह प्रति वर्ष 40 भेड़/मेमने विक्रय करते हैं। एक मेमने के विक्रय से लगभग 5000/- रू. प्राप्त करते है। वर्ष में दो बार भेड़ो की ऊन कटाई करते हैं। एक वर्ष में 12–15 किलो ऊन प्राप्त होती है । इस प्रकार दुलाराम लगभग 2.5 लाख रू. प्रति वर्ष की आमदनी प्राप्त कर लेता है। गावं में रोजगार के साधन कम होने पर भी गांव में रहकर भेड़ पालन द्वारा सरलता से अपना जीवन निर्वाह करने का उत्तम उदाहरण दुलाराम ने पेश किया है। **(सम्पर्क–दुलाराम गौरा मो. 9828046219)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

अधिक दूध उत्पादन के लिए पशुओं का समुचित प्रबंधन करें

प्रिय किसान और पशुपालक भाई और बहनों !

स्वस्थ पशु व उसकी बेहतर वृद्वि के लिए कुशल प्रबंधन किया जाना जरूरी है। दुधारू पशुओं से अधिकतम दूध उत्पादन करने के लिए उनके पोषण, आवास और स्वास्थ्य प्रबंधन के साथ ही उनकी दुहारी और दूध सुखाने के वैज्ञानिक प्रबंधों का पालन किया जाना चाहिए। पशु ब्याने के प्रथम तीन माह तक पर्याप्त ऊर्जा वाला पशु आहार खिलाने से दूध उत्पादन बढ़ता है। चार माह पश्चात् पशु को चारा और दाना उसकी दूध उत्पादन क्षमता के अनुसार दिया जाना चाहिए। दो किलो दूध उत्पादन पर एक किलो बांटा दें और मोटे चारे की कुट्टी काट कर खिलाएं। दुधारू पशु को आहार में प्रतिदिन 50 ग्राम खनिज लवण अवश्य देवें। पशु आवास पूर्णतः साफ–सुथरा व पर्याप्त रोशनी और हवादार होना चाहिए। आवास में पानी के फव्वारे अथवा टाटे लगाकर पशुओं को गर्मी से राहत देनी चाहिए। दुधारू पशुओं को निश्चित समय अन्तराल पर पूर्ण रूप से दुहना चाहिए जिससे दूध का संश्लेषण उचित रूप से बना रहे। अनुमानतः 15–16 लीटर से अधिक दूध देने वाले पशु को दिन में 2–3 बार दुग्ध उत्पादन से 15 से 20 प्रतिशत की वृद्वि प्राप्त कर सकते हैं। दूध दुहने से पहले व बाद में पशु के थनों को अच्छी तरह से साफ करें व दुहने के बाद थनों को आयडोफोर के घोल में डूबाने से थनों की बीमारी से बचा जा सकता है। थनों की बीमारी ''थनैला'' की समय पर जांच करवा लेनी चाहिए। दुधारू पशुओं का दूध सुखाने (ब्याने तक) के लिए दुधारू पशुओं को कम से कम 6–8 सप्ताह का विश्राम देना चाहिए जिससे अगली ब्यात के बाद अच्छा दूध उत्पादन हो सके। दुआरी अचानक बंद न करके धीरे–धीरे बंद करनी चाहिए। पेट के कीड़े मारने की दवा, टीकाकरण व बीमारियों से बचने के उपाय करके बीमारियों से समय रहते बचा जा सकता है। इन बातों का ध्यान रखकर आप आपने पशु से अधिकतम दुग्ध उत्पादन ले सकते हैं। जय हिन्द ! **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अप्रैल, 2018** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. त्रिभुवन शर्मा** **9414264997** अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	राजस्थान में पशुधन के विकास में राजुवास की योजनाएं	05.04.2018
2	**डॉ. अमिता रंजन** **9462471644** पशु भैषज एवं विष विज्ञान विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं में कीटनाशकों की उपयोगिता एवं विषाक्तता	12.04.2018
3	**डॉ. आर. के. तंवर** **9414136821** सेवानिवृत प्रोफेसर, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	गर्मियों में पशुओं में होने वाले रोग एवं उनके बचाव	19.04.2018
4	**डॉ. सुनील अरोड़ा** **9460084359** वेटरनरी कॉलेज, नवानियां–उदयपुर	विपरीत मौसमी परिस्थितियों में पशुओं का उचित प्रबन्धन व देखभाल	26.04.2018

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। **1800 180 6224**